● **सुनो, पढ़ो और गाओ :**

७. कुछ पाकर देख

-बुद्धिनाथ मिश्र

जन्म : १ मई १९४९, देवघा, समस्तीपुर (बिहार) । **रचनाएँ :** जाल फेंक रे मछेरे, शिखरिणी, जाड़े में पहाड़, नवगीत दशक आदि ।
परिचय : बुद्धिनाथ मिश्र जी को अनेक सम्मान-पुरस्कार प्राप्त हुए हैं । वे गीतकार, लेखक तथा काव्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं ।
प्रस्तुत कविता में कवि ने कुछ खोने-पाने, सपनों को सुलटाने, मन के दिए जलाकर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया है ।

स्वयं अध्ययन

निम्नलिखित शब्दों से संबंधित सुनी हुई कोई कविता सुनाओ :
जैसे- चाँद, लड़की, घर, दिया ।

कुछ खोकर, कुछ पाकर देख ।
दुनिया नई बसाकर देख ।
मौसम कदमों पर होगा
गैरों को अपनाकर देख ।
काँटे खुलकर हँस देंगे
बहलाकर, सहलाकर देख ।
मैं भी कितना हूँ तनहा
यह तू मुझमें आकर देख ।
लड़की लाड़ली लड़की है
चाँद-सितारे लाकर देख ।
सपने ही तो साथी हैं
सपनों को सुलटाकर देख ।
सारा जंगल जिंदा है
तू बादल बरसाकर देख ।
लौट के बिछड़े आएँगे
घर की राह सजाकर देख ।
'नाथ' अँधेरे को मत कोस
मन का दिया जलाकर देख ।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता सुनाएँ । विद्यार्थियों से कविता का व्यक्तिगत, सामूहिक, गुट में गायन करवाएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता के भाव स्पष्ट करें । कविता की कौन-सी पंक्ति उन्हें अच्छी लगी, पूछें एवं कारण बताने हेतु प्रेरित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

गैर = पराये

तनहा = अकेला

कोसना = भला-बुरा कहना

खोजबीन

चाँद पर पहुँचने वाले प्रथम अंतरिक्ष यात्री का यात्रावर्णन ढूँढ़ो और सुनाओ ।

अध्ययन कौशल

विद्यालय के पाँचवीं से आठवीं कक्षाओं के छात्र और छात्राओं की संख्या संयुक्त स्तंभालेख द्वारा दर्शाओ।

गणित सातवीं कक्षा पृ. ५१-५२

बताओ तो सही

'स्वंय को बदलो, समाज बदलेगा', इस विषय पर चर्चा करो और बताओ ।

*** कविता की पंक्तियों का अर्थ लिखो :**

(क) सारा जंगल ---------- -------- --------- सजाकर देख ।

(ख) मौसम ---------- -------- --------- सहलाकर देख ।

भाषा की ओर

दाएँ पंख में उपसर्ग तथा बाएँ पंख में प्रत्यय लगाकर शब्द लिखो तथा उनके वाक्य बनाओ :

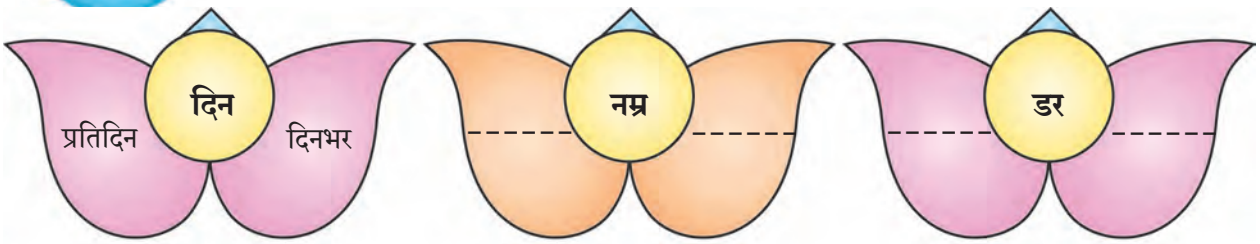

मैं प्रतिदिन खेलता हूँ । ---------- ----------

दिनभर नहीं खेलना चाहिए । ---------- ----------

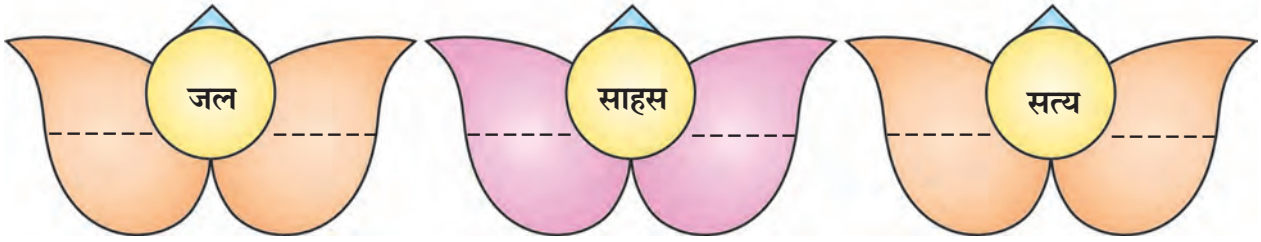

---------- ---------- ----------

---------- ---------- ----------